एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

खरगोश पालनः रोजगार और आमदनी का सशक्त जरिया

(*धीरज कुमार एवं राहुल बिश्नोई)
[1]शोध छात्र, पशु उत्पादन विभाग, राजस्थान कृषि महाविधालय, उदयपुर
[2]फार्म प्रबन्धक, कृषि अनुसंधान केन्द्र, मंण्डोर, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: dheerumaal@gmail.com

वर्ष 2022 तक सरकार ने किसानों की आय दुगनी करने का लक्ष्य रखा है। आय बढ़ाने के लिए किसानों को कृषि के इतर भी कुछ करना होगा, खरगोश पालन इन में से एक है। खरगोश पालन से ग्रामीण युवाओं को रोजगार मिलेगा और बेहतर आय भी। जनजातीय किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से राजस्थान कृषि महाविद्यालय में खरगोश पालन की एक यूनिट स्थापित की गई है। इस यूनिट पर किसानों को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है तथा साथ ही, खरगोश इकाई स्थापना के लिए किसानों को सहायता भी प्रदान की जा रही है।

खरगोश पालन की विशेषता

- खरगोश पालन के लिए कम स्थान की आवश्यकता पड़ती है।
- व्यवसाय शुरू करने में कम पूंजी लगती है.
- खरगोश शाकाहारी प्राणी होने से आहार लागत ज्यादा नहीं होती है।
- खरगोश पालन को कानूनी मान्यता मिली हुई है।
- खरगोश तीन माह में अपना वजन 2 से 3 किग्रा तक प्राप्त कर सकता है।
- खरगोश का मांस दूसरे जानवरों की तुलना में अधिक प्रोटीन, कम वसा और कोलेस्ट्रॉल वाला होता है।
- खरगोश की खाल से दस्ताने, टोपी, पर्स, जैकेट आदि परिधान तैयार किए जाते हैं।
- इसके बच्चे 4 से 6 माह में परिपक्व हो जाते हैं।

उन्नत नस्ल

ब्रायलर नस्ल– न्यूजीलैंड व्हाईट, सोवियन चिंचिला, ग्रे जाइंट, व्हाईट जाइंट, डेनिश व्हाईट, ब्लेक ब्राउन
ऊन के लिए– एशियन अंगोरा, जर्मन अंगोरा, ब्रिटिश अंगोरा

खरगोश की आवास व्यवस्था

खरगोश का आवास हमेशा हवादार और नमी रहित जगह पर बनाना चाहिए।

खरगोश को पालने के दो तरीके है

फर्श पर– इस पद्धति में केवल मांस वाली प्रजाति को पाला जा सकता है। क्योंकि, ऊन वाली प्रजाति की वह फर्श पर पालने से धूल के कणों से खराब हो जाती हैं। फर्श पर तीन–चार इंच ऊंची लकड़ी के बुरादे की बिछावन बिछाकर इसे मुर्गी की तरह आसानी से पाला जा सकता है। परंतु इस विधि में खरगोश को बिल बनाने की आदत के कारण वह फर्श और दीवार को खुरच देता है। दूसरी समस्या कोक्सिडियल नामक बीमारी का खतरा बना रहता है।
पिंजरा पद्धति– यह एक वैज्ञानिक पद्धति है। इसमें शुरुआती खर्चा अधिक होता है। परंतु खरगोश साफ–सुथरे और बीमारी रहित होते हैं। पिंजरों का आकार खरगोश की आयु और अवस्था के अनुसार बदलते रहते हैं।

यह पिंजरे निम्न प्रकार के होते हैं–

प्रसव पिंजरे– इन पिंजरों में तीन–चार दिन में बच्चे देने वाली गर्भवती मादा को रखा जाता है। यह दो पिंजरों को आपस में जोड़कर बनाया जाता है। जिनके बीच में एक द्वार होता है। एक पिंजरे में मादा और दूसरे में बच्चे रहते हैं। इसमें माता अपने बच्चों को दूध पिलाने के लिए आती जाती रहती हैं। पिंजरा में मादा के पिंजरे का आकार 1.5'1.5'1.5 मीटर और बच्चों के पिंजरे का आकार 1.5'1.5'1 मीटर होता है। इन पिंजरों में फर्श वाली जाली का आकार 19'19 मिमी (वयस्क के लिए) और 13'13 मिमी (बच्चो के लिए) से अधिक नहीं होनी चाहिए। जाली की मोटाई 2.5 मिमी (12 गेज) डायमीटर से कम नहीं होनी चाहिए।

ग्रोवर पिंजरे–जब बच्चों की आयु 28 से 42 दिन की हो जाती है। तो बच्चों को उनकी मां से अलग रखकर पालना चाहिए। इन पिंजरों का आकार 1'1'1 मीटर रखा जाता हैं। इन पिंजरों में 3 माह तक के बच्चों को रखा जा सकता है।

वयस्क पिंजरे– खरगोश की आयु जब 3 माह से अधिक हो जाती है तो उन्हें इन पिंजरो में स्थानांतरित कर दिया जाता है। इनका आकार 1.5'2'1.5 मीटर होता है।

प्रजनन पिंजरे – इन पिंजरों में नर खरगोश को रखा जाता है। क्योंकि, प्रजनन के समय हमेशा मादा खरगोश को नर के पास लाया जाता है। सामान्यत इन पिंजरों का आकार 1.5'2'1.5 मीटर होता है।

दूसरे उपकरण

खाने और पीने के बर्तन हमेशा साफ–सुथरे और बीमारी रहित होने चाहिए। खाने के बर्तन जे आकार के होते हैं। जिसमें बाहर से आसानी से दाना डाला जा सके। अंदर भी आसानी से खरगोश द्वारा खाया जा सके। पानी के लिए एक कटोरी का प्रयोग कर सकते हैं। जिसको पिंजरे के अंदर तार से बांध दिया जाता है।

खरगोश में प्रजनन

खरगोश को 6 माह की उम्र पर प्रजनन के लिए उपयोग में लिया जाता है। इनमें प्रजनन क्षमता कितनी होती है कि बच्चे देने के तुरंत बाद पुनः प्रजनन कराया जा सकता है। परंतु आदर्श खरगोश पालन हेतु एक माता से साल में पांच छह बार बच्चे लिए जाते हैं। खरगोश का गर्भकाल 30 32 दिन का होता है।बच्चे देने के लिए तीन–चार दिन पूर्व बच्चे वाले पिंजरे में सूखी घास(दूब) अथवा नारियल का रेशा बिछा दिया जाता है। जिससे मादा अपना घोंसला बना सके। एक बार में मादा खरगोश औसतन 6 से 8 बच्चे देती है।इन बच्चों पर बाल नहीं होते हैं और इनकी आंखें 10 से 14 दिन पर खुलती है । बच्चे पैदा होते ही मां को अलग कर देना चाहिए। बच्चों को सुबह और दिन में एक बार दूध पिलाना चाहिए। अगर माता के 8 से अधिक बच्चे होते हैं तो कुछ कम बच्चो वाली माता के साथ स्थानांतरित कर देना चाहिए। जिससे सभी बच्चों को सामान मात्रा में दूध मिल सके। एक महत्व बच्चों को दूध पिलाना चाहिए। बच्चों की उम्र 3 से 3 पॉइंट 5 माह और वजन 2 पॉइंट 8 से 3 किग्रा हो, तब बेचना चाहिए। खरगोश आवास में कम से कम 16 घंटे तक लाइट होना अनिवार्य है अन्यथा उनमें स्टर्लिटी, स्युडो गर्भवती और गर्भपात होने का डर रहता है।

खरगोश का आहार

दाना– खरगोश का दाना गोली अथवा चूर्ण के रूप में दिया जाता है। गोली के रूप में दाना बड़े चाव से खाते हैं। जब बच्चों की आयु 14 15 दिन की हो, उन्हें दाना खिलाना शुरू कर देना चाहिए। नवजात बच्चे को पहले सप्ताह में 5 ग्राम दाना प्रतिदिन देना चाहिए। यह मात्रा दूसरे सप्ताह में 10, तीसरे सप्ताह में 20 और जो 4 से 6 सप्ताह तक 3040 ग्राम दाना प्रतिदिन पहुंच जाती हैं। 4–6 माह के खरगोश को 80–100 ग्राम दाना प्रतिदिन देना चाहिए।

चारा– खरगोश को आहार का 30.40 प्रतिशत आहार चारे के रूप में देना चाहिए। खरगोश पालन क्रिया बहुत तेज होने की वजह से चारे का खास महत्व रहता है। वयस्क खरगोश को 1 दिन में 250.300 ग्राम जई, फेस्को घास, राई घास, मक्का, लोबिया, बरसीम, क्लोवर, रिजका और किचन अपशिष्ट चारे के रूप में दिए जा सकते हैं। चारा तुरंत काट कर नहीं खिलाना चाहिए। इसको दो–तीन घंटे धूप में सुखाकर खिलाना चाहिए। अन्यथा दस्त लगने का डर रहता है। चेहरे को शाम के समय डालें ताकि वह रात भर आराम से खा सकें।

खरगोश के रोग उपचार

कोक्सिडियोसिस– यह परजीवी जनित बीमारी है, जो यकृत और आंत को प्रभावित करती है। इसके कारण पहले हल्का बुखार आता है, अचानक बदबूदार दस्त लगना, श्लेष्मा और रक्त जनित मेंगनी करना, शरीर में पानी की कमी होना, वजन कम होना आदि लक्षण दिखते हैं। उपचार हेतु सल्फामिडिन् 15 मिग्रा ६ किग्रा शरीर भार अथवा एम्प्रोलियम सल्फेट 10 मिग्राधकिग्रा शरीर भार पर पांच 7 दिन तक दी जा सकती है।

कान का कैंकर (फोड़ा)– यह कानों की एक परजीवी जनित बीमारी है। कान पर तेज खुजली होती है जिसके कारण खरगोश अपना सिर हिलाता रहता है और कान में मवाद भर जाता है। प्रभावित जगह से बाल झड़ जाते हैं। इसके उपचार हेतु आईव रमैक्टिन् (0.06 एमएल चमड़ी के नीचे) का टीका लगाना चाहिए।

निमोनिया– फेफड़ों में सूजन को निमोनिया कहते हैं। इसमें खांसी आना, असाधारण सांस लेना, शरीर सुस्त होना, नाक बहना और बुखार आना आदि प्रमुख लक्षण हैं। इसके निवारण हेतु एंटीबायोटिक देनी चाहिए।